मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा स्नातकोत्तर भाग–2, विषय हिन्दी हेतु

शैक्षणिक सत्र/वर्ष : 2020-2021 के लिए

निर्धारित पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 के अनुसार प्रस्तुत किया गया

प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध)

एक प्लेट सैलाब के चरित्र

शोध निर्देशक
डॉ. मोहसिन ख़ान
हिन्दी विभागाध्यक्ष

परीक्षार्थी
निना श्रीनाथ हामणे

शोध केन्द्र

जनता शिक्षण मण्डल द्वारा संचालित

श्रीमती इंदिराबाई जी. कुलकर्णी कला, जे. बी. सावंत विज्ञान व सौ. जानकीबाई धोंडो कुंटे वाणिज्य महाविद्यालय, अलीबाग, जिला–रायगढ़

सन् : 2020-2021

Scanned with CamScanner

प्रमाणपत्र

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा स्नातकोत्तर भाग– 2, विषय हिन्दी हेतु शैक्षणिक सत्र/वर्ष 2018-2019 के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 : प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध)

कु/~~श्री~~/~~श्रीमती~~... निता श्रीनाथ हामणे ....परीक्षा बैठक ....

उक्त परीक्षार्थी ने ...... एक प्लेट सैलाब के चरित्र ....

.... विषय के

अंतर्गत महाविद्यालय स्तर पर प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) इसके पूर्व अन्य किसी भी परीक्षा/पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रमाणित किया जाता है कि उक्त परीक्षार्थी द्वारा सत्र– 4, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 : प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) सम्बन्धित निर्धारित किए गए सभी निकषों को पूर्ण किया है।

दिनांक : 17 /05/ 2021

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
अलिबाग
रायगड
जे.एस.एम. महाविद्यालय

विभागप्रमुख/शोध निर्देशक

परीक्षक

अनुक्रमणिका

DATE:

अध्याय क्रमांक	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्रमांक
	भूमिका	(1) से (2) तक
	मन्नू भंडारी : जीवन एवं रचना संसार	
अध्याय - 1	• प्रस्तावना	3
	1.1 जीवन परिचय	4 से 9 तक
	1.2 व्यक्तित्व	10 से 13 तक
	1.3 कृतित्व	14 से
	1.4 रचना संसार	15 से 16 तक
	• निष्कर्ष	17
	• संदर्भ सूची	18
	'एक प्लेट सैलाब' कहानियों के कथानक	
अध्याय - 2	• प्रस्तावना	19
	2.1 नई नौकरी	20 से 22
	2.2 बन्द दराजों का साथ	23 से 25 तक
	2.3 एक प्लेट सैलाब	26 से 28 तक
	2.4 छत बनानेवाले	29 से 31 तक
	2.5 एक बार और	32 से 34 तक
	2.6 संख्या के पार	35 से 37 तक
	2.7 बाँहों का घेरा	38 से 40 तक
	2.8 कमरे कमरा और कमरे	41 से 43 तक
	2.9 ऊँचाई	44 से 46 तक
	• निष्कर्ष	47
	• संदर्भ सूची	48 से 49 तक

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

DATE:

एक प्लेट सैलाब के चरित्र

	• प्रस्तावना	50
	3.1 पात्र	51 से 52 तक
	3.2 नई नौकरी	53 से 56 तक
अध्याय - 3	3.3 बन्द दराजों का साथ	57 से 59 तक
	3.4 एक प्लेट सैलाब	60
	3.5 छत बनाने वाले	61 से 63 तक
	3.6 एक बार और	64 से 65 तक
	3.7 संख्या के पार	66 से 68 तक
	3.8 बाहों का घेरा	69 से 70 तक
	3.9 कमरे, कमरा और कमरे	71 से 72 तक
	3.10 ऊँचाई	73 से 75 तक
	• निष्कर्ष	76
	• संदर्भ सूची	77 से 78 तक
अध्याय - 4	उपसंहार	79 से 81 तक
	संदर्भ ग्रंथ सूची	82

Scanned with CamScanner

भूमिका

DATE:

स्नातकोत्तर भाग 2 सत्र चतुर्थ के अंतर्गत मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुसार, अंतिम प्रश्न पत्र शोध अधिनिबंध के रूप में प्रस्तुत कराने की योजना है। इस योजना के तहत ही यह शोध अधिनिबंध प्रस्तुत किया जा रहा है, इस शोध निबंध के विषय निर्धारण से लेकर इसके समापन तक एक लंबी यात्रा का अनुभव मिला है। जिसके अंतर्गत हमने इस शोध निबंध से संबंधित प्रारूप, समस्या, विषय क्षेत्र और प्रक्रिया को जानने समझने के लिए हिन्दि विभाग के - विभागाध्यक्ष डॉ मोहसिन खान सर का निर्देशन प्राप्त किया।

सोलह प्रश्न पत्र निर्धारित किया गया है। इस प्रश्नपत्र में शोध अधिनिबंध प्रस्तुत करना है। जिसके लिए हमने अपने निर्देशक हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ मोहसिन खान सर से संपर्क किया। उसके पश्चात उन्होंने कुछ किताबोंके उपर हमारी रुची पुछी। हमने अपनी विधा कि रुची बताई की हमे इस विधा में रुची है। उन्होंने लायब्ररी में आपको इन्ही पुस्तकों पे काम करना है तो, इस पुस्तक को खोजकर मेरे पास लाइये। लाने के उपरान्त हमने सर से डिस्कशन किया। सन सर ने पहले उसको पढ़ने के लिये कहा और पढने के बाद मुझसे आके मिलने को कहा। पुरी किताब पढने के बाद फिर से सर से डिस्कशन किया। तो हमारे शोध निर्देशक उसमे राजी हुए फिर सर ने हमे अनुक्रमणिका बनाने में सहायता की और उसके अनुसार हमने कार्य करना प्रारंभ किया।

जब हम इस शोधकार्य को कर रहे थे तब हमारा अनुभव साहित्य को लेकर और विस्तृत हुआ कैसे साहित्य का समाज से संबंध जुडता है। ये सब चीजे हमे पता चली। जब लेखक मन्नू भंडारी जी की कृतियों को पढा तो हमे सामाजिक संवेदनाएँ समझ मे आई। उससे संबंधित हमने ये जो प्रयास किया है ये इसी का प्रतिपादन है। इस शोधकार्य में हमे

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

DATE:

कई महत्वपूर्ण व्यक्तीयोंकी सहायता लगी। जिसके अंतर्गत सबसे पहले हमारे शोध निर्देशक डॉ मोहसिन खान सर ने हमारी सहायता की। मै अपने शोधनिर्देशक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने इस विषय पर अपना योग्य निर्देशन एवं कुल कुशल मार्गदर्शन देकर मुझे प्रोत्साहित किया। मै हमारे नरेंद्र पाटील सर की भी आभारी हूँ। हमारे लायब्ररी के सर और मॉडम से मुझे सहायता मिली है इसलिए मैं इनकी भी आभारी हूँ। मैं अपने दोस्तोंकी भी आभारी हूँ। जिन्होंने शोध में आनेवाली कठिनाइयों को दूर कराके शोधकार्य को मूर्तरुप प्रदान करने में विशेष सहयोग किया है। साथ ही मेरे परिवार के सभी सदस्यों की भी आभारी हूँ।

मैं आशा करती हूँ की मेरे द्वारा लिखित मौलिक शोध प्रबंध आनेवाले जो विद्यार्थी है उनके लिए भी ये सहायक सिद्ध हो।

Scanned with CamScanner

अध्याय १ - जीवन एवं रचना संसार

DATE:

प्रस्तावना

किसी के व्यक्तित्व की पहचान के लिए उस व्यक्ति
का परिचय आवश्यक है। वैसे तो किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व
के मूल्यांकन करना कठिण कार्य है। और किसी प्रतिभशाली व्यक्ति
के व्यक्तित्व का चित्रण करना तो लगभग असंभव है. फिर
भी नेपोलियन ने कहा है कि-

" दुनिया मे कोई कार्य असंभव नहीं है "।[1]

उसी विश्वास के आधार पर मन्नु भंडारी के व्यक्तित्व के
विविध पहलुओं को उजागर करने हेतु हमने अल्प-सा प्रयास
किया है।

आधुनिक युग के साहित्यकारों में मन्नु भंडारी का अपना
अलग हि स्थान है। स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य में जिन
महिला साहित्यकारों के नाम सामने आते हैं, उनमे मन्नु
भंडारी का नाम सर्वप्रथम आता है। मन्नू भंडारी का साहित्य कहानि
उपन्यास एवं नाटक इन तीन विदयाओं से परिपूर्ण है। मन्नू भंडारी के
बिना आधुनिक कथा साहित्य कि चर्चा ही अपूर्ण लगती है।

मन्नु भंडारी का समग्र साहित्य उनके सिधे-साधे
और सच्चे व्यक्तित्व का आईना है। हिन्दी कहानी को स्वतंत्र
करने का श्रेय पर्याप्त मात्रा मे मन्नू भंडारी को है।

तेजस्वी विचार, रुढिमुक्त साहस और घरेलू आत्मी-
यता की सहजता ही मन्नू कि सबसे बड़ी शक्ति है। वह कहानि
लिखती नहीं, पाठक को आंतरंग घनिष्टता में लेकर कहानी
सुनाती है। बेहद सहज और सिधे पाठक तक पहुँचनेवाली ये
कहानियाँ हर स्तर और क्षेत्र में चर्चित हुई है।

मन्नु भंडारी की कहानीयों में पारिवारीक जिवन, पति-
पत्नी के बनते-बिगड़ते संबंध एवम् उन्मुक्त प्रेम आदि का चित्रण
सूक्ष्मता से हुआ है। उनकी कहानीयाँ पाठकों को कला दृष्टी से जिन्दगी
के 'आज' को समझने की दृष्टि देती है।

Scanned with CamScanner

DATE:

1.1. जीवन - परिचय

1.1.1 जन्म -

श्रीमती मन्नू भंडारी का जन्म 3 अप्रैल १९३१ को मध्यप्रदेश में स्थित भानपुरा नामक छोटे से गाँव में हुआ

1.1.2 पिता -

मन्नु भंडारी के पिता का नाम श्री सुख सम्मपराम था। वे चार भाई थे। उनका परिवार संयुक्त मारवाडी परिवार था। इन्दौर मे कांग्रेस की स्थापना इन्ही के घर मे हुई थी। स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधीत अन्य पक्षों के लोग भी इनके घर पर आते जाते रहते थे। "मन्नू भंडारी के व्यक्तित्व का श्रेय उनके पिताजि को है।"[2]

श्री सुख सम्पतराय हिन्दी साहित्य के जाने माने व्यक्ती थे। उन्होंने हिन्दी वारिवारीक शब्दकोश कि रचना आठ भागों में की है। उनकी कुछ अन्य रचनायँ भी है। जब विश्वकोश का काम चल रहा था, तब वो बीमार थे किंतु अंतिम समय तक विश्वकोश का ही काम करते रहे उनके पलग के निचे पांडुलिपीया रखी थी। वे सुधारवादी होते हुए भी उन्होंने अपनी पुत्री मन्नु का राजेन्द्र यादव से विवाह रचाने के पक्ष में नही थे। वे अन्तिम समय तक अपने दामाद से नही मिले। हो सकता है उन्होंने ऐसा भी सोचा हो की राजेन्द्र कि निश्चित आय न होने से मेरी पुत्री को कही अर्थिक कष्ट ना उठाना पडे। "मन्नुजी ने कहा भी की अगर एक बार वे राजेन्द्र से मिलते तो उनके स्वभाव के कारण और बात-चीत के ढंग से निश्चित ही प्रभावित होते किंतु ऐसा हुआ नही।"

मारवाडी जैन समाज में प्रचलित धारणा के विपरीत लड़कियों को शिक्षा देना, राजनीति मे हिस्सा लेने को प्रोत्साहन

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

DATE:

करना तथा रसोईघर में जाने नहीं देना आदि के कारण मन्नू भंडारी शिक्षा-जगत में पहुँच पायी है। मन्नू ने अपना प्रथम कहानी संग्रह "मैं हार गई" सन् १९५७ में उन्हीं को अर्पित करते हुए लिखा है- 'जिन्होंने मेरी किसी भी इच्छा पर कभी अंकुश नहीं लगाया - पिताजी को।' इस बात का प्रमाण है कि उनके व्यक्तित्व के विकास में पिताजी का कितना बड़ा योगदान है।

1.1.3 माता -

मन्नू भंडारी कि माता का नाम अनूपकुंवरि था। वह अनपढ़ थी। दिनभर घूंघट निकाले रहती थी। सयुक्त परिवार की सबसे बड़ी जिठानी होने से अपनी देवरानियों के साथ बहन जैसा व्यवहार करती थी। पिताजी से बिलकुल प्रतिकुल स्वभाव की उनकी माता थी। अनपढ़ होते हुए भी पति की किताबों को बांधना, पारसल की व्यवस्था करना जैसे छोटे-मोटे कार्य व्यवस्थित ढंग से करती थी। एक दिन एक सौ तीन डिग्री बुखार में भी जब वे इस प्रकार के कार्यों में लगी हुई थीं तब मन्नू ने उन्हें डांटा और प्यार से सुला दिया। जीवन में अनुपकुंवरि जी ने हर किसी को स्नेह देना ही सीखा था, किसी से लेना नहीं। उन्होंने कभी किसीसे कोई शिकवा-शिकायत नहीं की। हर परिस्थितिमें चुपचाप हर कार्य राजी-खुशी से करती रहती थी। मानो कर्म ही उनका जीवन था। माँ को लेकर मन्नू जब किसी बात से का पिता से विरोध करतीं या अवरोध करती तब वह कहतीं-

"मुझे कोई शिकायत नहीं है बेटा, तुम क्यों परेशान होती हो। जाओ अपना काम करो।"[4]

मन्नू के अंतर्जातीय विवाह का उसकी माताने विरोध नहीं किया और जीवन में आई हुयी हर स्थिती को वो स्वीकार करती चली गयीं। अपनी उदारमता माँ की याद आते ही आज भी मन्नू का हृदय भर जाता है। मन्नूजी ने अपने माँ के संबं

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा स्नातकोत्तर भाग–2, विषय हिन्दी हेतु

शैक्षणिक सत्र/वर्ष : 2020-2021 के लिए

निर्धारित पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 के अनुसार प्रस्तुत किया गया

प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध)

अनवर सुहैल का उपन्यास 'मेरे दुःख की दवा करे कोई' एक समीक्षात्मक अध्ययन

शोध निर्देशक
डॉ. मोहसिन ख़ान
हिन्दी विभागाध्यक्ष

परीक्षार्थी
गुलशन आरा कादीरी

शोध केन्द्र

जनता शिक्षण मण्डल द्वारा संचालित

श्रीमती इंदिराबाई जी. कुलकर्णी कला, जे. बी. सावंत विज्ञान व सौ. जानकीबाई धोंडो कुंटे वाणिज्य महाविद्यालय, अलीबाग, जिला–रायगढ़

सन् : 2020-2021

Scanned with CamScanner

प्रमाणपत्र

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा स्नातकोत्तर भाग– 2, विषय हिन्दी हेतु शैक्षणिक सत्र/वर्ष 2018-2019 के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 : प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध)

कु/श्री/श्रीमती गुलशन आरा नजिरद्दीन कादीरी ....परीक्षा बैठक EPAH 4

उक्त परीक्षार्थी ने अनवर सुहैल का उपन्यास 'मेरे दुःख की दवा करे कोई' एक समीक्षात्मक अध्ययन .... विषय के

अंतर्गत महाविद्यालय स्तर पर प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) इसके पूर्व अन्य किसी भी परीक्षा/पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रमाणित किया जाता है कि उक्त परीक्षार्थी द्वारा सत्र– 4, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 : प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) सम्बन्धित निर्धारित किए गए सभी निकषों को पूर्ण किया है।

दिनांक : 17/5/2021

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग अलिबाग रायगड जे.एस.एम. महाविद्यालय

परीक्षक

बिभागप्रमुख/शोध निर्देशक

एवं शोध निर्देशक
जनता शिक्षण मण्डल द्वारा संचालित
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
-४०२२०१, जिला-रायगड (महाराष्ट्र)

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक	अध्याय का नाम		पृष्ठ क्रमांक
	भूमिका		(i) से (ii) तक
	अनवर सुहैल : व्यक्तित्व, कृतित्व		
	प्रस्तावना		1 से 3 तक
अध्याय-1	1.1	जीवन एवं शिक्षा	4 से 5 तक
	1.2	परिवार	6 से 10 तक
	1.3	नौकरी	11 से 15 तक
	1.4	कृतित्व परिचय	16 से 50 तक
		निष्कर्ष	51
		संदर्भ ग्रंथ सूची	52 से 57 तक
	'मेरे दुःख की दवा करे कोई' समीक्षात्मक अध्ययन		
	प्रस्तावना		58 से 59 तक
अध्याय-2	2.1	कथानक	60 से 64 तक
	2.2	पात्र एवं चरित्र	65 से 93 तक
	2.3	संवाद	94 से 95 तक
	2.4	वातावरण	96 से 100 तक
	2.5	भाषा-शैली	101 से 107 तक
	2.6	उद्देश्य	108 से 109 तक
		निष्कर्ष	110 से 112 तक
		संदर्भ ग्रंथ सूची	113 से 120 तक
	'मेरे दुःख की दवा करे कोई' समस्याएँ		
	प्रस्तावना		121 से 123 तक

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

अध्याय-3	3.1	वैश्याकृति की समस्या	124 से 129 तक
	3.2	सांप्रदायिकता, धर्म के वर्चस्व की समस्या	130 से 133 तक
	3.3	पारिवारिक समस्या	134 से 138 तक
	3.4	आर्थिक समस्या	139 से 141 तक
	3.5	आतंकवाद की समस्या	142 से 144 तक
	3.6	स्त्रियों के जीवन की समस्या	145 से 149 तक
		निष्कर्ष	150
		संदर्भ ग्रंथ सूची	151 से 154 तक
अध्याय-4		उपसंहार	155 से 158 तक
		संदर्भ ग्रंथ सूची	159

Scanned with CamScanner

भूमिका

स्नानकोत्तर भाग 2 सत्र चतुर्थ के अंतर्गत मुंबई विश्व विद्यालय, मुंबई द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुरूप अंतिम प्रश्न पत्र शोध अधि-निबंध के रूप में प्रस्तुत कराने की योजना है। इस योजना के तहत ही यह शोध अधिनिबंध प्रस्तुत किया जा रहा है। इस शोध निबंध के विषय निर्धारण से लेकर इसके समापन तक एक लंबी यात्रा का अनुभव मिला है, जिसके अंतर्गत हमने इस शोध निबंध से संबधित प्रारूप, समस्या, विषय क्षेत्र और प्रक्रिया को जानने समझने के लिए हिन्दी विभाग के – विभागाध्यक्ष डॉ. मोहसिन खान सर का निर्देशन प्राप्त किया।

सोलह प्रश्नपत्र निर्धारित किया गया है। इस प्रश्नपत्र में शोध अधिनिबंध प्रस्तुत करना है। जिसके लिए हमने अपने निर्देशक हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. मोहसिन खान सर से संपर्क किया। उसके पश्चात उन्होंने कुछ किताबों के उपर हमारी रूची पुछी। आपकी किस में रूची है। हमने उस अपनी विधा की रूची बतायी कि हमे इस विधा में रूची है। उन्होंने लायब्ररी में आपको इन्हीं पुस्तको पे काम करना है, तो इन-इन पुस्तकों को आप खोजीए और खोजकर हम लाये। लाने के उपरान्त हमने सर से डिस्कशन किया। सर ने इस में बताया कि ऐसे-एसे इसको पहले पढ़ो फिर हमने पढ़ा। पढ़ने के दौरान हमे ऐसा आभास हुआ कि इसमें से हम इस विषय पर काम कर सकते है और इस विषय पर जब हमने मन बनाया काम करने का, सर से डिस्कशन किया तो हमारे शोध निर्देशक उस में राजी हुए। फिर हमे शोध निर्देशन ने अनुक्रमणिका बनाने में सहायता की और उसके अनुसार हमने कार्य करना प्रारंभ किया।

जब हम इस शोधकार्य को कर रहे थे तब हमारा अनुभव साहित्य को लेकर और विस्तृत हुआ कैसे साहित्य को हम गहरे में उतार सकते है, कैसे साहित्य का समाज से संबंध जुड़ना है ये सब चीजे हमें पता चली और हमने जो लेखक है इस लेखक की कृतियों को जब पढ़ा तो हमे सामाजिक संवेदनाएँ समझ में आयी। भाव उसके शिल्प समझ में आए और उससे संबंधित हमने ये जो प्रयास किया है ये इसी का प्रतिपादन है। इस शोधकार्य में हमें कई महत्वपुर्ण व्यक्तियों

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

की सहायता लगी। जिसके अंतर्गत सबसे पहले हमारे शोध निर्देशक डॉ. मोहसिन खान सर ने हमारी सहायता की। मैं अपने शोध निर्देशक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, जिन्होंने इस विषय पर शोध अधिनिबंध प्रस्तुत करने हेतु प्रेरणा प्रदान की तथा अपना योग्य निर्देशन एवं कुशल मार्गदर्शन देकर मुझे प्रोत्साहित किया। मैं मेरे कोलेज के मा. प्रा अनिल पाटील सर की भी आभारी हूँ। हमारे लायब्ररी के सुबोध उहाके सर, माधवी बन मैडम, रोकडे सर से भी मुझे सहायता मिली है, इसीलिए मैं इनकी आभारी हूँ। मैं अपने दोस्तों की भी आभारी हूँ। जिन्होंने शोध में आनेवाली कठिनाइयों को दूर कराके शोधकार्य को मूर्तरूप प्रदान कराने में विशेष सहयोग किया हैं। साथ ही मेरे परिवार के सभी सदस्यों की भी आभारी हूँ।

मैं आशा करती हूँ कि मेरे द्वारा लिखीत मौलिक शोध प्रबंध आनेवाले जो विद्यार्थी है उनके लिए भी ये सहायक सिद्ध हो।

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

अध्याय - 1

'मेरे दुःख की दवा करे कोई'

अनवर सुहैल का व्यक्तित्व और कृतित्व

प्रस्तावना :- साहित्य और समाज एक-दूसरे के पूरक हैं क्योंकि साहित्य समाज का दर्पण होता है। साहित्य में समाज की प्रक्रिया और प्रतिक्रिया दोनों ही शामिल होते हैं। जिसे लेखक साहित्य के माध्यम से जाहिर करता है। लेखक का मन अधिक संवेदनशील होने की वजह से वह समाज को सूक्ष्म-से-सूक्ष्म दृष्टि से देखता है। कोई भी रचनाकार काल, युग, परिस्थिति और विचारधारा से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। एक रचनाकार को बनाने में इनकी भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। प्रत्येक रचनाकार को अपने युगीन परिस्थितियों से अवगत होना आवश्यक होता है, महान रचनाकार वही होता है, जो अपने युगीन परिस्थितियों का ज्ञान रखता है। इसके ज्ञान के बिना वह अपने युग विशेष के लिए प्रासंगिक नहीं हो सकता। जिस युग में हम जी रहे हैं जिस समाज में और जिस समय में जी रहे हैं, उसको जानना भी रचनाकार के लिए जरूरी हो जाता है इसलिए काल का प्रश्न भी रचनाकार के लिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है। कोई भी रचनाकार अपने परिवेश से प्रभावित अवश्य होता है किन्तु परिस्थितियां उसे बेचैन करती है, मजबूर करती है, अपने समाज की सच्चाई को बयां करने में, इन्हीं परिस्थितियों के बल पर ही एक महान सृजन-कर्त्ता का जन्म होता है। प्रत्येक रचनाकार के मूल में कोई-न-कोई विचारधारा प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से अवश्य छिपी रहती है, जिसके फल स्वरूप वह महत्त्वपूर्ण कृति विशेष का सृजन कर पाता है। बिना विचारधारा के कोई भी रचनाकार एक महान सर्जन नहीं बन सकता। कभी

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

रचनाकार विचारधारा से प्रभावित होता है तो कभी एक नए विचारधारा का सृजन भी करता है किन्तु साहित्य केवल विचारधारा का पुंज भी नहीं है बल्कि उसमें संवेदना भी निहित होती है। रचनाकार अपने विवेक के अनुसार ही किसी विचारधारा को अपनाता है या गढ़ता है।

अनवर सुहैल का परिवेश कतई साहित्यिक नहीं था लेकिन उनकी सोच को निर्मित करने में वहां के परिवेश का महत्वपूर्ण योगदान रहा। वह यह खुद भी कहते है कि "इस परिवेश के बदौलत मैं लिखता हूं। इसमें तमाम लोग हैं, चरिंद-परिन्द हैं धूप-छाँह हैं... जो मेरे वजूद में वाबस्ता हैं... इस परिवेश का मैं शुक्रगुजार हूँ।"[1] इसलिए उन्होंने अपने उपन्यास में, कहानियों में, कविताओं में परिवेश को ही आधार बनाया है जो स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। अनवर सुहैल अपने साक्षात्कार में लिखते हैं कि "लेखक कोई कैमरामैन नहीं है कि फोटो खींचकर लोगों को चमत्कृत कर दे। लेखक के दिमाग और दिल के बीच कहीं पर एक स्कैनर रहता है जो नामालूम चीजों को भी किसी कोने में सुरक्षित रख देता है। लेखन के समय वो डिटेल अनायास लेखक की कलम पर आकर बैठ जाती है।"[2] अतः कहने का तात्पर्य यही था कि रचनाकार अपने युग-विशेष को ध्यान में रखता है, समाज में चल रही गतिविधियाँ उनके दिमाग के एक कोने में बैठी रहती हैं जो उन्हें लिखने के लिए मजबूर करती हैं।

उनका परिवेश कोयले के खदानों से घिरा हुआ था। उस स्थान का नाम है मनेन्द्रगढ़ यह मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ के बीच वाला हिस्सा है। यह सरगुजा जिले का एक आदिवासी क्षेत्र है। "जब भारत में औद्योगिक-क्रांति हुई थी, उसके बाद ब्रिटिश राज को ऊर्जा माँग को पूरा करने के लिए कोयले की विपुल आवश्यकता थी। अंग्रेजों ने तभी इस क्षेत्र का निरीक्षण किया। यहाँ कोयले का बड़ा विशाल भण्डार मिला। चिरीमिरी, विश्रामपुर, बैकुंठपुर, कोतमा शहडोल होते हुए कोरबा और फिर सिंगरौली का क्षेत्र उन्हें वहां कोयला ही कोयला मिला। अंग्रेजों ने इस कोयले के उत्खनन के लिए ठेकेदार और भाड़े के

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

गोरखपुरिया मजदूर को लेकर आए। इस कोयले की ढुलाई के लिए रेलपांत बिछाई गई... कोयला खदानों से घिरे मनेन्द्रगढ़ को 'गेटवे ऑफ़ सरगुजा' भी कहा जाता है। बाहरी मजदूरों की दैनिक आवश्यकताओं के लिए मनेन्द्रगढ़ में एक नया उपभोक्ता बाजार बना। और यही बाज़ार इस नगर में तमाम धर्मावलम्बियों की आश्रय-स्थली भी बना। इस नगर में रोजगार के लिए देश के हर प्रदेश के व्यवसायी और सरकारी/ग़ैर-सरकारी कर्मचारी आने लगे। देखते ही देखते नगर एक 'मिनी हिंदुस्तान' सा बन गया था। धीरे-धीरे कतिपय उत्साही युवकों ने बैकुंठपुर में एक साहित्यिक संस्था 'संबोधन' के नींव डाली लेकिन जल्द ही बैकुंठपुर से उठकर मनेन्द्रगढ़ में 'संबोधन' स्थाई रूप से आ गया। 'सम्बोधन' साहित्य और कला परिषद के माध्यम से नगर में कई गतिविधियाँ होने लगीं और अनवर सुहैल जैसे किशोर उससे लाभान्वित होते रहे।"3 अनवर सुहैल के घर का अनुशासित परिवेश और बाह्य-जगत में अपने अस्तित्व की सार्थकता के लिए बेचैनी ही शायद उन्हें निरंतर लिखने के लिए प्रेरित करती रही है।

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

1.1 अनवर सुहैल : जीवन एंव शिक्षा

जीवन परिचय

अनवर सुहैल समकालीन हिंदी कथा जगत के एक जाने पहचाने कथाकार, लेखक और एक कवि हैं। वास्तव में रचनाकार को रचनात्मक शक्ति की प्रेरणा उनके अनुभव प्रत्यक्ष या परोक्ष और आसपास के घटित होने वाली कुछ ऐसी घटनाएँ जिससे समाज प्रभावित हो रहा है उससे मिलती हैं। वही घटनाओं को सृजनात्मक ढंग से रचनाकार पाठक के सामने प्रस्तुत करता है। ऐसा नहीं है कि अनवर सुहैल पहली बार अल्पसंख्यकों के बारे में लिख रहे हैं। उनसे पूर्व अल्पसंख्यक-विमर्श की शुरुआत हो चुकी थी। किन्तु इस विमर्श के सूत्र मुस्लिम रचनाकारों से पूर्व प्रेमचंद ने रख थे। हिंदी जगत में प्रेमचंद से ही अल्पसंख्यकों को कथा-साहित्य में स्थान देना प्रारंभ हुआ। प्रेमचंद के कथा-साहित्य में अल्पसंख्यक वर्ग के पात्र राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की एकता और सामासिक संस्कृति के रूप में आते हैं। अगर अल्पसंख्यक में से 'मुस्लिम वर्ग' को लिया जाए तो देखा जा सकता है कि पहले भी साहित्य में मुस्लिम पात्र आते हैं जरूर पर वह उभरते हैं या तो हिन्दू-मुस्लिम के दंगों में या फिर ईद के दिन पढ़ी गयी नमाज और मुहर्रम पर हुए सुन्नी-शिया फसाद में। किन्तु समकालीन रचनाकार उनकी भावनाओं, कुंठाओं और समस्याओं को या ये कहें कि उनकी आंतरिक स्थिति को समझने का प्रयास करते हैं और उसे साहित्य में व्यक्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

जन्म और पारिवारिक परिचय

अनवर सुहैल का जन्म 01 अक्टूबर, सन् 1964 ई. में छत्तीसगढ़ के जांजगीर नामक स्थान में हुआ। अनवर सुहैल के पिता का नाम गफ्फार खान है जो पेशे से शिक्षक थे। उनकी माता का नाम जाहिदा इस्माइल है। उनकी पत्नी का नाम नाजरा पैकर है। उनकी दो बेटियां हैं बड़ी बेटी का नाम हिना फिरदौस

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

और छोटी बेटी का नाम सबा शाहीन है।

शिक्षा दीक्षा

मनेन्द्रगढ़, पहले मध्य-प्रदेश के सरगुजा जिले की एक तहसील था। पर बाद में जब छत्तीसगढ़ बना तब मनेन्द्रगढ़ कोरिया जिले में आ गया। उसी मनेन्द्रगढ़ के रेल्वे स्कूल में अनवर सुहैल ने प्राथमिक शिक्षा पाई। उसके बाद नगर के शासकीय आदर्श उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में उन्होंने छठवीं से लेकर ग्यारहवीं तक की पढ़ाई की। उसके बाद शहडोल के शासकीय पोलिटेक्निक से उन्हों ने खनन-अभियांत्रिकी में डिप्लोमा किया। फिर कोल इंडिया लिमिटेड में नौकरी करते हुए प्रबंधन की परीक्षा पास किया और वर्तमान में कोल इंडिया में वरिष्ठ प्रबंधक पद पर कार्यरत हैं।

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा स्नातकोत्तर भाग–2, विषय हिन्दी हेतु

शैक्षणिक सत्र/वर्ष : 2020-2021 के लिए

निर्धारित पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 के अनुसार प्रस्तुत किया गया

प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध)

एक था कलाकार : तात्विक परिचय

शोध निर्देशक
डॉ. मोहसिन ख़ान
हिन्दी विभागाध्यक्ष

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग
अलिबाग रायगड
जे.एस.एम. महाविद्यालय

परीक्षार्थी
हर्षल भालचंद्र काठे

शोध केन्द्र

जनता शिक्षण मण्डल द्वारा संचालित

श्रीमती इंदिराबाई जी. कुलकर्णी कला, जे. बी. सावंत विज्ञान व

सौ. जानकीबाई धोंडो कुंटे वाणिज्य महाविद्यालय, अलीबाग, जिला–

रायगढ़

सन् : 2020-2021

Scanned with CamScanner

प्रमाणपत्र

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा स्नातकोत्तर भाग– 2, विषय हिन्दी हेतु शैक्षणिक सत्र/वर्ष 2018-2019 के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 : प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध)

कु/श्री/श्रीमती हर्षल भालचंद्र काठे .... परीक्षा बैठक ....

उक्त परीक्षार्थी ने एक था कलाकार : तात्विक परिचय ....

.... विषय के

अंतर्गत महाविद्यालय स्तर पर प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) इसके पूर्व अन्य किसी भी परीक्षा/पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रमाणित किया जाता है कि उक्त परीक्षार्थी द्वारा सत्र– 4, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 : प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) सम्बन्धित निर्धारित किए गए सभी निकषों को पूर्ण किया है।

दिनांक : 17 /05/ 2021

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग • जे.एस.एम. महाविद्यालय • अलिबाग रायगड

विभागप्रमुख/शोध निर्देशक

स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष
एवं शोध निर्देशक
जनता शिक्षण मण्डल द्वारा संचालित
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
अलिबाग-४०२२०१, जिला-रायगड (महाराष्ट्र)

परीक्षक

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्र.
	भूमिका	1 से 2 तक
	जीवन एवं रचना संसार : रामदरश मिश्र	
अध्याय-1	* प्रस्तावना	3 से 4 तक
	1.1 - जन्म	4 से 5 तक
	1.2 - परिवार	6 से 8 तक
	1.3 - शिक्षा - दिक्षा	9 से 10 तक
	1.4 - अध्यापन कार्य	11 से 13 तक
	1.5 - व्यक्तित्व	13 से 16 तक
	1.5.1 - बाह्य व्यक्तित्व	
	1.5.2 - आंतरिक व्यक्तित्व	
	1.6 - श्री रामदरश मिश्र का रचना संसार	16 से 19 तक
	1.6.1 - काव्य संग्रह	
	1.6.2 - उपन्यास	
	1.6.3 - कहानी संग्रह	
	1.6.4 - समीक्षात्मक कृतियाँ	
	1.6.5 - ललित निबंध	
	1.6.6 - यात्रा वर्णन	
	1.6.7 - आत्म कथाएँ	
	* निष्कर्ष	20
	* संदर्भ सुची	21 से 22 तक
अध्याय-2	एक था कलाकार : तात्विक परिचय	

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

	* प्रस्तावना	23
	2.1- कथावस्तु / कथानक	24 से 30 तक
	2.2- पात्र एवं चरित्र चित्रण-	31 से 39 तक
	2.2.1- शिवनाथ (शिवजी)	
	2.2.2- भारती	
	2.2.3- देवेश	
	2.2.4- जया	
	2.2.5- असीम	
	2.2.6- पटेलानी और पटेल	
	2.2.7- इब्राहिम अल्काजी	
	2.3- संवाद	40 से 42 तक
	2.4- वातावरण - तथा देशकाल	43 से 44 तक
	2.5- भाषा शैली	44 से 46 तक
	2.6- उद्देश्य	47
	* संदर्भ सुची	48 से 49 तक
अध्याय-3	एक था कलाकार : संघर्ष एवं समस्याएँ	
	3.1- कला का संघर्ष एवं समस्या	50 से 53 तक
	3.2- दरिद्रता से संघर्ष एवं समस्या	53 से 56 तक
	3.3- स्वास्थ्य संघर्ष एवं समस्या	56 से 57 तक
	3.4- पारिवारिक संघर्ष एवं समस्या	58 से 59 तक
	3.5- मानसिक संघर्ष एवं समस्या	59 से 60 तक
	* संदर्भ सुची	61
अध्याय-4	उपसंहार	62 से 63 तक
	संदर्भ ग्रंथ सुची	64

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

DATE:

भूमिका -

स्नातकोत्तर भाग 2 सत्र चतुर्थ के अंतर्गत मुंबई विश्व विद्यालय, मुंबई द्वारा निर्धारित प्रारूप के अनुसार अंतिम प्रश्न पत्र शोध अधिनिबंध के रूप में प्रस्तुत कराने की योजना है। इस योजना के तहत ही यह शोध अधिनिबंध प्रस्तुत किया जा रहा है। इस शोध निबंध के विषय निर्धारण से लेकर इसके समापन तक एक लंबी यात्रा का अनुभव मिला है, जिसके अंतर्गत हमने इस शोध निबंध से संबंधित प्रारूप, समस्या, विषय क्षेत्र और प्रक्रिया को जानने समझने के लिए हिन्दी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मोहसिन खान सर का निर्देशन प्राप्त किया।

प्रश्नपत्र क्र. 16 निर्धारित किया गया है। इस प्रश्नपत्र में शोध निबंध प्रस्तुत करना है। जिसके लिए हमने अपने निर्देशक हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. मोहसिन खान सर से संपर्क किया। उसके पश्चात उन्होंने कुछ किताबों के उपर हमारी रुची पुछी। हमने उन्हें उपन्यास में रुची है यह कहा तो उन्होंने कहा की लायब्ररी में आपको इन्ही पुस्तकों पर काम करना है और इन-इन पुस्तकों को आप खोजिए और खोजकर लाईये। लाने के उपरान्त हमने सर से विचार विमर्श किया। फिर सरने बताया कि ऐसे-ऐसे इसको पहले पढ़ो फिर हमने पढ़ा पढ़ने के दौरान हमे ऐसा आभास हुआ कि इसमें से हम इस विषय पर काम कर सकते है। जब हमने इस विषय पर काम करने का मन बनाया तो हमारे शोध निर्देशक उस में राजी हुए। फिर हमारे शोध निर्देशक ने अनुक्रमणिका बनाने में सहायता की और उसके अनुसार हमने कार्य करना प्रारंभ किया।

जब हम इस शोधकार्य को कर रहे थे तब हमारा अनुभव साहित्य को लेकर और विस्तृत हुआ कैसे साहित्य को हम गहरे में उतार सकते है, कैसे साहित्य का समाज से संबंध जुडता है यह सब चिजे हमे पता चली और हमने लेखक रामदरश मिश्र का उपन्यास "एक था कलाकार" को जब पढ़ा तो हमे सामाजिक संवेदनाएं समझ

DATE:

में आयी। भाव, उसके शिल्प समझ में आय और उससे संबंधित हमने ये जो प्रयास किया है यह इसी का प्रतिपादन है। इस शोधकार्य में हमें कई महत्वपुर्ण व्यक्तियों की सहायता लगी। जिसके अंतर्गत सबसे पहले हमारे शोध निर्देशक डॉ. मोहसिन खान सर ने हमारी सहायता की। मैं अपने शोधनिर्देशक के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हुँ, जिन्होने इस विषय पर शोध आधिनिबंध प्रस्तुत करने हेतु प्रेरणा प्रदान की तथा अपना योग्य निर्देशन एवं कुशल मार्गदर्शन देकर मुझे प्रोत्साहित किया। मैं मेरे कॉलेज के भी. प्रा. अनिल पाटिल सर का भी आभारी हूँ। हमारे लायब्ररी के सुबोध डहाके सर, शेकडे सर से भी मूझे सहायता मिली है, तथा हिंदी विभाग के नरेंद्र पाटिल सर से भी मुझे सहायता मिली है, इसलिय मैं उनका आभारी हुँ। मेरी सहपाठी मिनल और नेता का भी आभारी हुँ। और जिन्होने शोध में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करके शोधकार्य को मूर्तरूप प्रदान कराने में विशेष सहयोग किया है। साथ ही मेरे परिवार के सभी सदस्यों का भी मैं आभारी हुँ।

मैं आशा करता हुं कि मेरे द्वारा लिखीत मौलिक शोध प्रबंध आनेवाले जो विद्यार्थी है उनके लिय भी यह सहायक सिद्ध हो।

Scanned with CamScanner

अध्याय -1- जीवन एवं रचना संसार -
रामदरश मिश्र

DATE:

प्रस्तावना -

रचनाकार रामदरश मिश्रजी को किसी भी पहलू से समझना दूरूह नहीं है। उन्हें कहानी, उपन्यास, कविता आदि के माध्यम से अपने आसपास महसूस किया जा सकता है। उनके स्वभाव की सरलता हमें अपनी ओर खिंचती है। वे अपनी कहानियों में भी उतने ही निच्छल, उपन्यासों में उतने ही अकृत्रिम एवं कविताओं में उतनेही मुक्त होकर बहने वाले है। उनके हृदय से जो धारा निकली सामाजिक आवरणो को तोडती हुई विभिन्न विधाओं के माध्यम से सिधी पाठकों के हृदय की धारा में मिलती है। उनकी निश्छलता आज भी साहित्य में उन्हे एक "कबीर वट" बनाये हुए है। जिसकी शाखा दर शाखाएं एवं उसके मूल साहित्य के विविध विधाओं में नजर आती है।

मिश्रजी की रचनाओं से समाज को निसंदेह पहचाना जा सकता है, पैनी दृष्टि से देखने पर उनकी रचनाओं में समाज के अन्य पहलू भी देखे जा सकते है। एसे अदभूत रचनाकार जिसकी कलम में जादू है। उन्होने जिस किसी विद्या में लिखा श्रेष्ठतम लिखा। हिन्दी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में अपना योगदान देनेवाले मिश्रजी के जीवन की परतों को खोल कर उसमें झांकना होगा। आखिरकार ऐसा महान साहित्यकार जीवन के किन किन पडावों से गुजरा होगा? उन पडावों में बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था को हृदय से कैसे महसूस किया होगा? जिसके पश्चात आज वे सामान्य मनुष्य के इतने करीब पहुंच गये है। परत दर परत खोलने पर जो बीज निकलता है वह है उनका "देसीपन" जो आज विशाल वटवृक्ष बना है। "कविता, गीत, गजल, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, समीक्षा, आत्मवृत, शोध, यात्रावृत्त आदि अनेक विधाओं पर उन्होंने कलम चलाई है। उन सब में सकारात्मक मूल्यों के

Scanned with CamScanner

DATE:

प्रति आस्था के साथ "देसीपन" का उभार देखा जा सकता है जिसे "लोक संवेदना" का नाम भी दिया गया है। इस "देसीपन" के चलते मिश्रजी मुखौटों और आरोपित मुद्राओं वाले व्यक्तियों के साथ सहज नहीं हो पाते, जबकि उनसे मिलनेवाले ज्यादातर व्यक्तियों को उनका अकृत्रिम "देसीपन" भा जाता है।"[1] ऐसे अद्भुत व्यक्तित्व के धनी जो अपने भीतर बहुत सी खूबियाँ समेटे हुए हैं, उनकी जीवन यात्रा निस्संदेह अनेक उबड़-खाबड़ रास्तों से गुजरी होगी।

धर्मों की खड़खड़ और वाहनों की भरभर से प्रदूषित आज की जिन्दगी से जूझे, दिल्ली जैसे महानगर में जबरन अपने आप को खपाये मिश्रजी की जीवन यात्रा के पहले पड़ाव से ही परिचय प्राप्त करते हैं।

1.1. जन्म :

जन्म और मृत्यु ये दो जीवन की ऐसी वास्तविकता है, जो मनुष्य के अपने हाथ में नहीं है। वह अपनी जिन्दगी का चुनाव नहीं कर सकता, जन्म जहाँ मिले वहीं उसे स्वीकार करना है। पर हाँ! कर्म की लेखनी से अपनी कोरी जिन्दगी की किताब में बहुत कुछ लिख पाता है। 15 अगस्त 1999 को पचहत्तर वर्ष पूरे करनेवाले मिश्र जी ने भी "मसी", "कागद" से अपनी जिन्दगी की किताब को अनेक रंगोंमें रंग दिया है।

ललित रचनाकार श्री रामदरश मिश्रजी का जन्म 15 अगस्त 1924 को हुआ था। गोरखपुर का एक छोटा सा गाँव डुमरी, जो आने वाले इस नन्हे मेहमान को जैसे जिन्दगी के आने वाले तुफानों से परिचय करवाना चाहता था। जन्म के साथ ही जिन्दगी ने तुफानों का सामना किया - "कहते हैं, मैं जिस रात (15 अगस्त, श्रावण पूर्णिमा, 1924 की रात) को पैदा हुआ वह बहुत भयावनी थी और प्रसूतिगृह में तमाम कीड़े-मकोड़े भर गये थे। इन कीड़ों को

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

DATE:

देहात में जमुआ कहते है और विश्वास है कि ये नवजात शिशु को जान लेने के लिए आते है। माँ को कहाँ सुध रही होगी पडोस की एक फुआ ने यह देखा तो घबरा गयीं और मुझे उठाकर दूसरे कमरे मे भागी। यानी मैं पैदा होते ही मौत के मुँह मे चला गया था और फांदकर चला आया। मेरी जीवन यात्रा में कीडे-मकोडे भी खूब मिले लेकिन मुझे उनसे बचाने वाली शक्तियाँ भी मिलती ही गयी।"[2]

भारत जैसे बडे देश में एक छोटे से गाँव डुमरी ने 1924 को एक अद्भूत रचनाकार दिया। अपने बचपन से लेकर आज तक न उनके हृदय से डुमरी छुटा न कलम से साहित्य। डुमरी गाँव की पाठशाला में लिखवायी जन्म-तिथि गलत थी। जिसे वे नहीं भूल पाये है, पर आज उन्हे याद करके आक्रोश अवश्य करते है, "जब मेरी जन्म-तिथि लिखाई गयी तो मैंने बहुत झगड़ा किया। जन्म-तिथि लिखाई गयी 3 जनवरी 1925। मैं बार बार जोर देकर चिल्लाया कि गलत है यह तिथि। मेरी जन्म-तिथि 15 अगस्त, 1924 है लेकिन किसी ने मेरे कहे पर ध्यान नहीं दिया। मुझे बहुत अजीब लगा कि मेरी असली जन्म-तिथि छोड़कर नकली जन्म-तिथि लिखी गयी थी। स्कूल में प्रवेश पाने के लिए प्रथम दिन ही झूठ का एक धक्का जो लगा वह बाद में व्यापक तथा गहरा होकर लगता ही रहा।"[3]

गाँव की मिट्टी में पले बडे साहित्यकार दिल्ली जैसे बडे शहर में रहते हुए भी अपने गाँव से दूर नहीं हो पाये है। आज भी उस गाँव में बिते बचपन के दिनों में वे खो जाते है। स्कूल की पढाई, अपने भाई के साथ की शरारते, खेतों में नंगे पैर घूमना, मेलों की सैर, विभिन्न ऋतुओं का भीतरी स्पर्श, बाढ प्लेग, माकी दूरी आदि न जाने क्या कुछ जो कवि की जीवन यात्रा के पाथेय बने हुए है।

Scanned with CamScanner

प्रमाणपत्र

मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई द्वारा स्नातकोत्तर भाग– 2, विषय हिन्दी हेतु शैक्षणिक सत्र/वर्ष 2018-2019 के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 : प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध)

कु/~~श्री/श्रीमती~~ मिनल गणेश ठाकूर परीक्षा बैठक ....

उक्त परीक्षार्थी ने मित्रो मरजानी समिक्षात्मक अध्ययन

.... विषय के

अंतर्गत महाविद्यालय स्तर पर प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) इसके पूर्व अन्य किसी भी परीक्षा/पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

प्रमाणित किया जाता है कि उक्त परीक्षार्थी द्वारा सत्र– 4, प्रश्नपत्र क्रमांक–16 : प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) सम्बन्धित निर्धारित किए गए सभी निकषों को पूर्ण किया है।

दिनांक : 17/05/2021

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग • अलिबाग रायगड़ • जे.एस.एम. महाविद्यालय

परीक्षक

विभागप्रमुख/शोध निर्देशक

डॉ. मोहसिन खान
स्नातकोत्तर हिन्दी विभागाध्यक्ष
एवं शोध निर्देशक
जनता शिक्षण मण्डल द्वारा संचालित
कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
अलिबाग-४०२२०१, जिला-रायगड़ (महाराष्ट्र)

Scanned with CamScanner

प्रतिज्ञापत्र

कु/श्री/श्रीमती मिनल गणेश ठाकूर ....
परीक्षा बैठक क्रमांक – ....; प्रतिज्ञापूर्वक प्रमाणित करता/करती है, कि मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा स्नातकोत्तर भाग–2, विषय हिन्दी हेतु शैक्षणिक सत्र/वर्ष 2020-2021 के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार प्रश्नपत्र क्रमांक–16: प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध)....................................

....मित्रो मरजानी : समिक्षात्मक अध्ययन....

....

शीर्षक से प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) डॉ. मोहसिन ख़ान के निर्देशन में प्रस्तुत करता/ करती है।

प्रस्तुत प्रकल्प के अंतर्गत किया शोध महाविद्यालय के स्तरानुरूप स्वतंत्र और मौलिक होने के साथ आवश्यकतानुसार सन्दर्भ दिए गए हैं। यह प्रकल्प (शोधनिबंध/लघुप्रबंध) इसके पहले अन्य किसी भी परीक्षा/ पाठ्यक्रम हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग • जे.एस.एम. महाविद्यालय • अलिबाग रायगढ

परीक्षार्थी

विभागाध्यक्ष

दिनांक : 17/ 5 / 2021

स्थान : जे. एस. एम. महाविद्यालय, अलीबाग-रायगढ़

Scanned with CamScanner

भूमिका

स्नातकोत्तर भाग 2 सत्र चतुर्थ के अंतर्गत मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई निर्धारित प्रारूप के अनुरूप अंतिम प्रश्नपत्र शोध अधिनिबंध के रूप में प्रस्तुत कराने की योजना है। प्रस्तुत शोध अधिनिबंध को संपन्न बनाने में जिन विद्वानों तथा आत्मीयजनों ने सहायता की है उन सबके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। शोध-कार्य के प्रारंभ से लेकर समाप्ती तक शोधार्थी को न जाने कितने अभिभावकों का सहयोग एवं आशीर्वाद मिलता रहता है। उनके प्रति कृतज्ञता का भाव व्यक्त करने हेतु धन्यता का अनुभव क्यों नहीं होगा?

प्रथमतः तो परम कृपालु परमात्मा की अहेतु कृपादृष्टि की हकदार होने के नाते उनके प्रति मेरी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। उनका दी दिया हुआ सब कुछ है, उन्हीं की चाह से यह निबंध करने का प्रयास सफल हो पाया है। जिसके अंतर्गत हमने इस शोध निबंध से संबंधित, प्रारूप, समस्या, विषय क्षेत्र और प्रक्रिया को जानने समझने के लिए हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मोहसिन खान सर का निर्देशन प्राप्त किया। इस शोध आधिनिबंध प्रस्तुत करना है। जिसके लिए हमने निर्देशक सर डॉ. मोहसिन खान सर से संपर्क किया। उसके पश्चात उन्होंने कुछ किताबें हमारे सामने रख कर तुम्हारी रुची के हिसाब से और डॉ. मोहसिन खान सर के निर्देशन के अनुसार हमने पुस्तकों का अध्ययन किया। इस उपन्यासों को पढ़ो फिर हमने पढ़ा। पढ़ने के दौरान

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

हमे ऐसा आभास हुआ कि इस विषय मे हम और जादा काम कर सकते है। कुछ सोच सकते है। पढ़ने के बाद हम इस उपन्यास मूल्य क्या समझ आया यह सर डिस्कशन किया तो हमारे शोधनिर्देशक उसमे राजी हुए। उसके अनुसार हमने अपना कार्य करना शुरु कर दिया।

जब हम इस शोधकार्य को कर रहे थे तब हमारा अनुभव साहित्य को लेकर और भी ज्यादा विस्तृत हुआ कैसे साहित्य को हम गहरे मे उतर सकते है, कैसे साहित्य का समाज से संबंध आता है यह सब चीजे पता चली मैने जब कृष्णा सोबती के 'मित्रो मरजानी' उपन्यास की कृतियों को जब पढ़ा तो हमे नारी की सहनशीलता, धैर्य, संवेदनाएँ, हिंसा-अहिंसा समझ आयी इस शोध कार्य मे मुझे कई महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की सहायता लगी। जिसके अंतर्गत सबसे पहले शोध निर्देशक डॉ. मोहसिन खान सर ने डेजरटेशन कैसे करना है ये समझाया। यह बनाते वक्त समस्याएँ आयी सर ने सभी समस्याएं दूर कियी। लायब्ररी की भी हमे मददत हमे हुई। उनकी भी आभारी हू हमारे सर आ. प्राचार्य श्री. अनिल पाटील सर आभारी हू। हमारे एम. ए हिन्दी विभाग के सहाय्यक शिक्षक श्री. नरेंद्र पाटील सर की भी आभारी हूँ। हमारा मित्र हर्षल काठे की मै आभारी हू उसने बहुत सहाय्यता की मेरी सहेली निता हामण की भी आभारी हूँ। क्योकी समाज मे आगरे यह महामारी के कारण सब कुछ फोन से और online के कारण कर पाना बहुत मुश्कील

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

था। पर इनके सब की सहायता से यह शोध कार्य में कोई भी परेशानी नहीं आयी। साथ ही साथ मेरे परिवार के सभी सदस्यों खास तौर पर मेरे पती की भी मैं आभारी हूँ।

मै आशा करती हूँ कि मेरे द्वारा लिखित मौलिक शोधप्रबंध आनेवाले जो विद्यार्थी है उनके लिए भी यह सहायक सिद्ध हो।

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक	अध्याय का नाम	पृष्ठ क्र.
	भूमिका	(i) से (iii)
	कृष्णा सोबती : जीवन एवं व्यक्तित्व, कृतित्व	
	1.1 जन्म, शिक्षा एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि	1 से 3
अध्याय-1	1.2 सुरुचि एवं स्वभाव, शिक्षा, वेशभूषा	4 से 5
	1.3 व्यक्तित्व, जिंदादिल व्यक्तित्व	6 से 7
	पुरस्कार एवं सम्मान, खानपान	8 से 12
	स्पष्टवादी	
	आशावादी, स्त्री स्वतंत्रता की समर्थक	13 से 15
	कृतित्व : कहानियां, कविताएं संस्मरण	16 से 20
	• निष्कर्ष	21 से 22
	• सन्दर्भ सूची	23 से 24
	मित्रो मरजानी एक समिक्षात्मक अध्ययन	
	2.1 पात्र एवं चरित्र चित्रण	25 से 31
	2.2 भाषाशैली	32 से 33
अध्याय-2	2.3 वातावरण	33 से 35
	2.4 कथानक	36 से 37
	2.5 संवाद	38 से 52
	• निष्कर्ष	53 से 53
	• सन्दर्भ सूची	54 से 55

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

		मित्रो मरजानी : समस्याएँ	
अध्याय-3	3.1	स्त्री मानसिकता का परंपरावादी अनुकूलन	56 से 60
	3.2	अकेलेपन की समस्या	60 से 61
	3.3	आर्थिक समस्या	61 से 62
	3.4	अंधविश्वास की समस्या	63 से 64
	3.5	यौन पवित्र संबधी समस्या	64 से 67
	3.6	दहेज की समस्या	67 से 68
	3.7	शिक्षा का अभाव	68 से 70
	3.8	अधिकार से वंचित नारी की समस्या	70 से 71
	3.9	संयुक्त परिवार की समस्या	71 से 72
		• निष्कर्ष	73 से 74
		• सन्दर्भ सुची	75 से 75
अध्याय-4		उपसंहार	76 से 82
		• सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	83 से 84

FOR EDUCATIONAL USE

Scanned with CamScanner

अध्याय - 1

कृष्णा सोबती : जीवन एवं व्यक्तित्व, कृतित्व

1.1 प्रस्तावना

कृष्णा सोबती का व्यक्तित्व बहुआयामी है। रचनाकार के व्यक्तित्व का अध्ययन उनकी रचनाओं के लिए सहायक सिद्ध होता है। इसलिए रचनाकार के व्यक्तित्व एवं उनके जीवन परिचय को देखना शोधार्थी के लिए उपयुक्त माना गया है। कृष्णाजी के व्यक्तीत्व के बारे मे तथा उनके जीवन परिचय के बारे मे बहुत कम लेखन हुआ है। स्वतंत्र रूप से तो इस पर लिखे गये ग्रंथ का अभाव ही है। स्वतंत्र रूप से स्वयं कृष्णाजी ने अपने जीवन एव व्यक्तित्व को लेकर न लिखा है और न लिखना आवश्यक माना है। जो कुछ भी फुटकर सामग्री पत्र-पत्रिकाओं में आती है उसीसे पाठकों तक थोड़ी सी जानकारी पहुँचती है। फिर भी यहाँ प्रथम अध्याय कृष्णा सोबती के व्यक्तित्व व कृतित्व से संबंधित है। इसके अंतर्गत कृष्णा सोबती का जीवन परिचय अर्थात् जन्म, शिक्षा, पुरस्कार एवं सम्मान, परिवार, वेशभूषा, खान-पान, लेखन और स्वभाव आदि का संक्षिप्त विवेचन कर उनके सभी कृतित्व का उल्लेख किया है। कृष्णा सोबती का एक व्यक्ति और अभिव्यक्ती के रूप में परिचय दिया है। इसमें जन्म से लेकर उनका व्यक्तिगत परिचय, उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, उनके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू तथा उनके समग्र अभिव्यक्ति रूप का विवेचन प्रस्तुत किया है। पृ.133

भारतीय साहित्य के परिदृश्य पर हिन्दी की विश्वसनीय उपस्थिती के साथ कृष्णा सोबती अपनी संयमित अभिव्यक्ति और सुथरी रचनात्मकता के लिए जानी जाती हैं। कम लिखने को वे अपना परिचय मानती हैं, जिसे स्पष्ट इस तरह किया पृ.162

जा सकता है कि उनका 'कम लिखना' दरअसल 'विशेष' लिखना है। किसी युग में किसी भी भाषा में एक-दो लेखक ही ऐसे होते हैं जिनकी रचनाएँ साहित्य और समाज में घटना की तरह प्रकट होती हैं अपनी भावात्मक ऊर्जा और कलात्मक उत्तेजना के लिए एक प्रबुद्ध पाठक वर्ग को लगातार आश्वस्त करती है

1.2 जीवन

1.2.1 जन्म :- तिथि एवं स्थान

कृष्णा सोबती का जन्म १८ फरवरी, १९२५ में पंजाब प्रांत के गुजरात जिले में हुआ। गुजरात जिला अब पाकिस्तान में है। स्वतंत्रता प्राप्ति के ऐतिहासिक कालखण्ड में कृष्णाजी बीस-बाईस साल की थीं। स्वतंत्र देश की लेखिका और नागरिक होने के नाते लम्बे दशकों के बीचो-बीच में से गुजरते हुए कृष्णाजी ने साधारण व्यक्ती की हैसियत से ही जीया, देखा और अनुभव किया। वह सब सामान्य होते हुए भी कृष्णाजी ने एक ऐसा वजूद धारण कर लिया जो इतिहास की दस्तावेजी प्रामाणिकता से छेड़-छाड़ किए बिना सीधे जन-साधारण की हकीकत से बँधा है।

कृष्णाजी के जीवन का प्रारंभिक काल देश और समाज की दृष्टि से उथल-पुथल का काल था। आजादी का आंदोलन अपनी चरमसीमा पा रहा था। परिवर्तन ही परिवर्तन तथा परिवर्तन के बीच उनके जीवन के आरंभिक दिन बीत गए। जन्म के बारे में कृष्णा सोबती के विचार है — "जिंदगी की

शुरुवात सिर्फ जन्म से ही नही होनी परिवर्तनों के बीच अपने के साथ भी होनी है। शताब्दी की पहली चौथ में जन्मी मेरी पीढ़ी ने उसे घटित होते देखा जिसके लिए कोई इंतजार करती है और कई कई बार शताब्दियाँ भी।"[1] स्पष्ट होता है कि कृष्णा सोबती का जन्म स्वतंत्रता पूर्वकाल में और उनका लेखन स्वातंत्र्योत्तर काल में हुआ।

1.2.2 बचपन एवं परिवार

पृ.133

जिस परिवार में कृष्णा सोबती का जन्म हुआ उस परिवार में उनके माता पिता तथा भाई-बहन भी थे। अपने माता-पिता तथा भाई बहन के बीच कृष्णाजी का बचपन बीता। इस परिवार में देश की आजादी के प्रति जिज्ञासा थी व्यवसा थी और प्रतीक्षा भी। जैसे ही देश को आजादी मिली, इस परिवार में खुशी की लहर दौड़ी। देश को आजाद हुए देखकर यह परिवार आनंदित हुआ। इंडिया गेट के पुराने जख्मों पर जगे हुए एहसास' नामक लेख में कृष्णाजी ने लिखा है - "आजादी का त्यौहार मनाने हम भाई-बहन चाँदनी चौक जा पहुचें[2] उनके परिवार में किताबों के प्रति विशेष रुची रही। अलग-अलग पुस्तकों को सभी भाई-बहन अपनी-अपनी रुचि के अनुसार पढ़ा करते थे। कृष्णा सोबती ने लिखती है - "जैसे जैसे हम भाई-बहन बड़े होते गए रुचि के मुताबिक अपनी पसंद किताबों के नजदीक गए[3] समय-संगम में भी कृष्णा सोबती अपने तत्कालीन पारिवारिक जीवन का प्रतिबिंब पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करती है। जैसे-

पृ.162

"पुराने छुट्टी के दिन आँखों में तैरने लगे। कितना जमाना गुजर चुका। हर इतवार हाथ से पॉलिश किया करते थे"[4]
स्पष्ट है कि कृष्णा सोबती का बचपन अपने माता-पिता और बहन-भाई के बीच बीता। किताबें पढ़ने के प्रति इस परिवार में विशेष रुचि परिलक्षित होती है।

1.2.3. अभिरुचि एवं स्वभाव

कृष्णाजी अपने लिए कम वस्तुएँ खरीदती है। यहाँ वहाँ का छोटा-मोटा, रंग-बिरंगा सामान इकट्ठा करते जाना उन्हें ना पसंद है। कृष्णा सोबती पर अपने माँ-बाप के स्वभाव का प्रभाव परिलक्षित होता है। पिता जी से उन्होंने शौक से खर्च करना सीखा है तो माता जी से उन्होंने व्यर्थ का व्यय टालना सीखा है। अपने माता-पिता की रुचियों को उन्होंने समान रूप से सिखा है। कसकर इस्तेमाल होनेवाला ठोस सामान ही कृष्णाजी की आँखों पर चढ़ता है। फालतू खर्चा उन्हें पसंद नहीं है। इसके बारे में स्वयं कृष्णा सोबती कहती है- प्र.133
"खर्च करने का ढंग मेरा न बहुत छोटा है न बहुत बड़ा। माँ से यह सीखा है की जो भी खर्च करो यह न लगे की लुटाया जा रहे है। पिता जी से यह कि ऐसे खर्च करो कि अपने को भी खामखाह जरूरत न लगे। शौक लगे"[5] स्पष्ट है की इन्हें न कंजूसी मान्य है और न अनावश्यक व्यय। आवश्यक लेन-देन में ही उनकी रुचि होती है। प्र.162

1.2.4 शिक्षा

कृष्णा सोबती की शिक्षा अनेक स्थानों पर हुई है। जैसे दिल्ली, शिमला और लाहौर आदि। पुरे हिन्दुस्तान में घूमने के साथ ही अनेक विदेश यात्राएँ भी की है। "अनुभव ने उनके कथन और कथ्य में बहुत ही विलक्षण तेवर और समृद्धि का सारांश सृजित किया गया है।"[6] आजकल वह रूप में रहती थी। वह अपना पूरा समय लेखन कार्य में लगाती है।

1.2.5 वेशभूषा

कृष्णा सोबती की वेशभूषा सीधी-सादी परिलक्षित होती है। वे महीन कपडे पहनना ज्यादा पसंद करती है। मौसम के हिसाब से बंधों पर शॉल ओढ़ रहती है। चश्मे के भीतर से झाँकती हुई भूरी आँखे सामनेवाले के अंतरमन को टटोल लेती है। वस्तुतः कृष्णा सोबती पूरी तरह से भारतीय नारी की प्रतिनिधी लगती है। उनके सर का पल्लू भी कभी नीचे खिसकता नहीं। स्वयं उनके शब्दों में "एक घमंडी औरत और चमक-दमक वाला लिबास और अपने को दुसरों से अलग समझनेवाले लोगों से उसे नफरत है।"[7] वैसे तो वे पंजाबी सलवार कुर्ता ओढ़नी और उसके ऊपर शॉल लेना भी पसंद करती थी। वेशभूषा में उनको सादगी पसंद है। सीधी-सादी लिबास ही वे पसंद करती है। अपने मन का ओढ़ना-पहनना ही कृष्णाजी को पसंद है। वह कहती है- "आप वह पहनिए जो आपके मन को भाए।"[8]